आँख ये धन्य है।

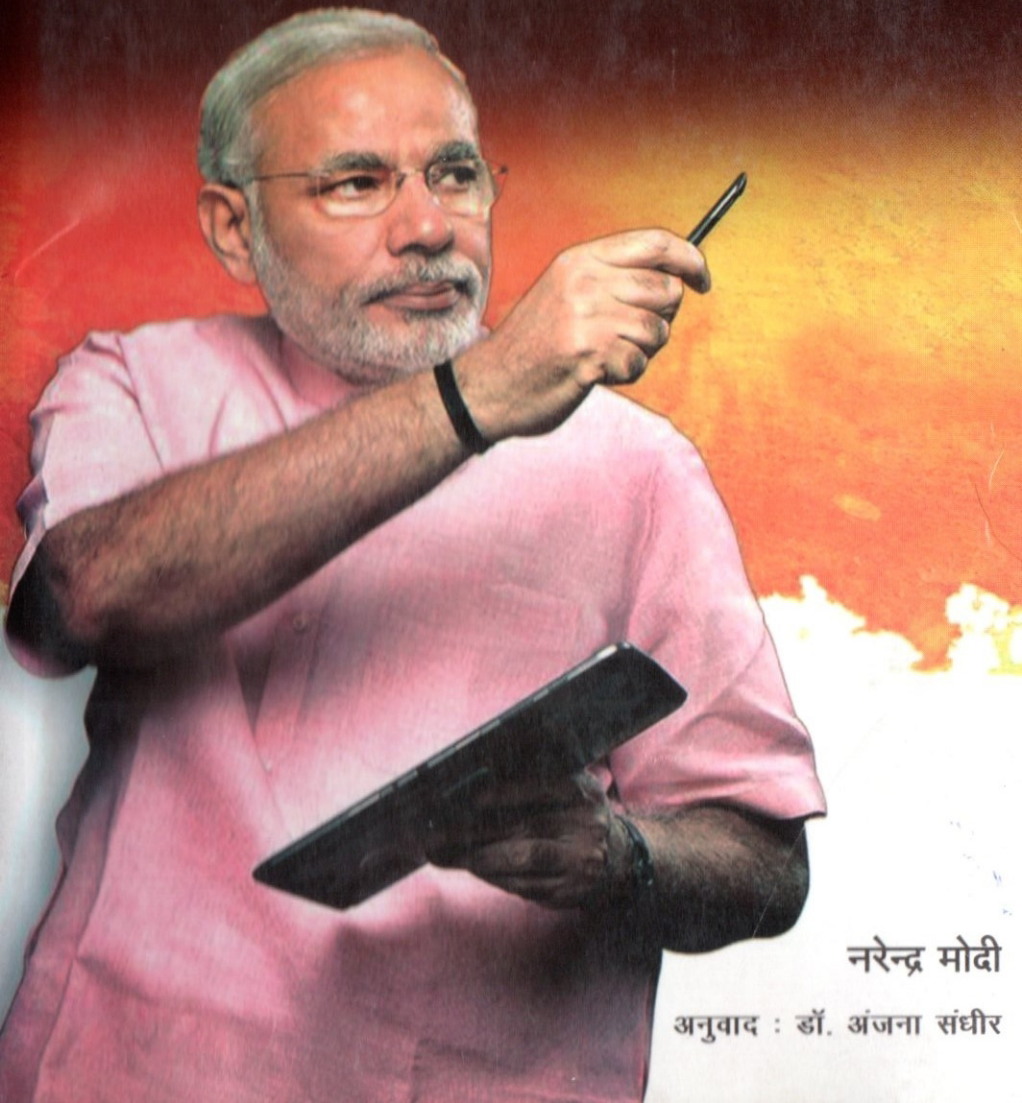

नरेन्द्र मोदी

अनुवाद : डॉ. अंजना संधीर

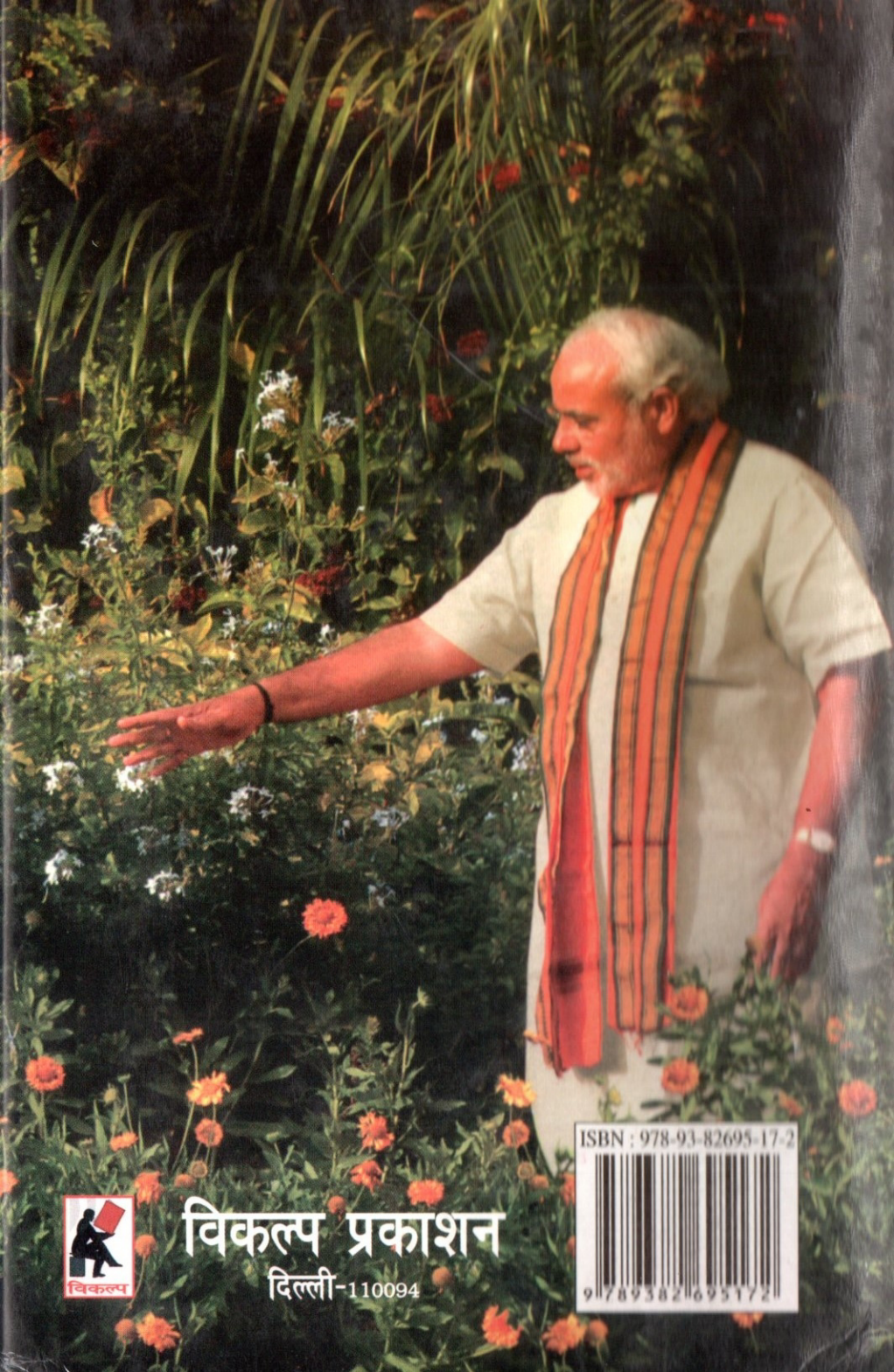

ISBN : 978-93-82695-17-2

विकल्प प्रकाशन
दिल्ली-110094

प्रयत्न

सर झुकाने की बारी आये
ऐसा मैं कभी नहीं करुंगा ।
पर्वत की तरह अचल रहूँ
व नदी के बहाव-सा निर्मल ।

श्रृंगारित शब्द नहीं मेरे
नाभि से प्रकटी वाणी हूँ ।
करता हूं इस धरती से प्रीत
खामोशी का आनंद लेते हुए
गाता हूँ गीत ।

संस्कारों की लय ताल में
गूंज रही है कोई सदी,
नीचा देखने की बारी आये,
ऐसा मैं कभी नहीं करुंगा ।

मेरे एक-एक कर्म के पीछे
ईश्वर का हो आशीर्वाद
गलत जो नहीं करता
वो कभी नहीं डरता,
भीतर ही भीतर होते सब संवाद ।

मेरा आचरण मेरे वचनानुसार,
होगा नहीं बुरा कभी
नीचा देखने की बारी आये
ऐसा नहीं करुंगा मैं कभी ।

इसी पुस्तक में से

जाना नहीं

यह सूर्य मुझे पसंद है
अपने सातों घोड़ों की लगाम
हाथ में रखता है
लेकिन उसने कभी भी घोड़े को
चाबुक मारा हो
ऐसा जानने में आया नहीं ।

इसके बावजूद
सूर्य की मति
सूर्य की गति
सूर्य की दिशा
सब एक दम बरक़रार
केवल प्रेम

नरेन्द्र मोदी

अनुवाद : डॉ. अंजना संधीर

DR. ANJANA SANDHIR
Contact :
E-mail : Anjana_Sandhir@yahoo.com
M. : 90990 24995

आँख ये धन्य है !

(काव्य-संग्रह)

लेखक

नरेन्द्र मोदी

अनुवाद : डॉ. अंजना संधीर

(मूल गुजराती से हिन्दी में अनुवादित 67 कविताओं का संग्रह)

विकल्प प्रकाशन

दिल्ली-110094

अपनी बात

मैं साहित्यकार अथवा कवि नहीं
अधिक से अधिक मेरी पहचान
सरस्वती के उपासक की हो सकती है।
बहुत लम्बे समय से लिखा इधर-उधर,
क्षत-विक्षत पड़ा सब संकलित हो,
छोटी-सी पुस्तक के रूप में तैयार हुआ
यह संग्रह आपके हाथों में सौंपता हूँ।
मेरी प्रार्थना है :
पुस्तक में मेरी पद-प्रतिष्ठा को न देखें
कविता के पद का आनंद लीजिए।
मेरे कल्पनालोक की खुली
छोटी-सी खिड़की में से
दुनिया को जैसा देखा, अनुभव किया,
जैसा जाना, आनंद लिया
उसी पर अक्षरों से अभिषेक किया।
मेरा चिंतन, मनन अथवा अभिव्यक्ति
मौलिक है ऐसा मेरा कोई दावा नहीं।
पढ़े, सुने की छाया, अथवा परछाईं से भी
वह मुक्त नहीं हो सकती।
मेरी रचनाएँ कभी भी सार्वजनिक कसौटी पर
उतरी नहीं हैं इसलिए उनकी खामियों की तरफ़ भी
मेरा ध्यान गया नहीं है।
सब रचनाएँ श्रेष्ठ हों, ऐसा भी नहीं
परंतु कभी-कभी कच्चे आम का स्वाद भी
अलग तरह का स्वाद दे जाता है,
ऐसा भी हो सकता है।

मेरे देश को प्रेम करे

वो मेरा परमात्मा !

□□□

गुजरात के अनेक साहित्यकारों को मैंने पढ़ा है।
गुजरात की साहित्य यात्रा के एक माँझी,
श्री सुरेश दलाल के साथ साहित्य-चर्चा के दौरान
मेरे अंदर बसी कविता को
वे भाँप गये।
उन्हीं के स्नेहवश मेरी भावना के संसार को
मैंने उनके सामने खोल दिया...खुल गया...
उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा कि मेरी कल्पना,
भावना का विश्व चाहे मेरी निजी सम्पत्ति है
लेकिन हम गुजराती लोग...
सम्पत्ति यूँ ही पड़ी रहे, योग्य नहीं है
और, तब मेरी क्षत-विक्षत पड़ी रचनाओं ने
संसार में नीड़ बनाना आरंभ किया।

सब एकत्र करते-करते
नीड़ काफी बड़ा बन गया।
श्री सुरेश भाई ने समय निकाल,
उनमें से कविताएँ छाँट लीं
और एक शिल्पकार की तरह
घौंसला बाँधने में अच्छी मदद की।
मेरी रचनाओं का ये नीड़
आपको निमंत्रण देता है...
पल दो पल आराम लेने पधारो,
मेरे इस नीड़ में, आपको भाव जगत मिलेगा
और भावनाएँ लहरायेंगी। कविता के साथ
प्रकृति यात्रा की कल्पना श्री सुरेश भाई ने दी,
मुझे अच्छी लगी, आपको भी
पसंद आयेगी....

20.3.2007

—नरेन्द्र मोदी

अनुक्रम

प्राक्कथन : डॉ. अंजना संधीर 7

अपनी बात : नरेन्द्र मोदी 13

1. धन्य 19
2. अचानक 21
3. हम 22
4. विलाप 23
5. सम्पूर्ण विश्व 24
6. आज 25
7. हम तो 26
8. आफ़त 27
9. आस 28
10. उष्मा का अभाव 30
11. उठो लाल ! विजय स्वीकारो 31
12. उठो वीर 33
13. एकाध आँसू ! 35
14. ऐसे मनुष्य 36
15. उत्सव 37
16. कारगिल 39

17. क्रियापद 41
18. स्वाभिमान 42
19. गति का गीत 43
20. गरबा 45
21. गीत में 47
22. गुलछड़ी 48
23. गौरव 49
24. छोड़ो 50
25. जाना नहीं 51
26. छत्र-छाया 52
27. बोले बसंत 53
28. तुम्हें मुबारक 54
29. तस्वीर के उस पार 55
30. दृश्य 57
31. देह का काम देह करे 58
32. नर्मदा 59
33. जिंदा दिल 60
34. ललकार 61
35. तितली 63
36. परिचय 64
37. पारदर्शक 66
38. प्रतीक्षा 67

39. प्रभु कृपा 68
40. प्रयत्न 69
41. प्रार्थना 70
42. प्रेम 72
43. कशमकश 73
44. आधी रात को 74
45. मेरा मन 75
46. मन से समर्पित होना 76
47. मंत्र 78
48. माँ मुझे दैवत्व देना 80
49. माया 82
50. मिलने दो मेले में 83
51. यात्रा 84
52. रहस्य 85
53. रमेश पारेख 86
54. लक्ष्य को पाने 87
55. वंदे मातरम् 88
56. विषम और विचित्र 89
57. विस्मय की सुबह 90
58. व्यथा को बहने देना 91
59. शब्द 93
60. सनातन मौसम 94

61. सपनों के बीज 95
62. समन्वय 96
63. मल्लाह 97
64. संकल्प 98
65. याद 99
66. हिन्दू-हिन्दू मंत्र 101
67. ग्यारहवीं दिशा 103

धन्य

पृथ्वी ये सुंदर है
आँख ये धन्य है

हरी-भरी घास पर धूप फैल रही यहाँ
किसी भी तरह धूप की तेजी सहन होती नहीं

व्योम तो भव्य है
ये पृथ्वी भी अद्‌भुत है

आकाश में इन्द्रधनुष फैलता, इतराता
हवा में रंगों के आकार खींचता

किस जन्म का ये पुण्य है,
ज़िंदगी धन्य है, धन्य है।

समुद्र ये उछलता है, ऊँची लहरों में
किसे पता क्या भरा है बादलों के अंदर

विपुल ! भरपूर ये शून्य है
पृथ्वी ये सुंदर है।

मानव के मेले संग मेल ये मिलता रहा
पर दूसरों के साथ में मैं, खुद को
आंतरिक पीड़ा देता रहा।

ये सब अनन्य है
और कुछ तो अगम्य है।

धन्य, धन्य, धन्य है
पृथ्वी मेरी सुंदर है।

अचानक

अँधेरे के कागज़ पर
मैं एक सरोवर रेखांकित करता हूँ
सरोवर पर झुकती है एक डाली
भँवरों की गुंजन लेकर

गहरे अंधकार को हल्का करने
मैं बनाता हूँ एक चन्द्रमा
देता हूँ उसको नीला, आसमानी रंग
सरोवर के शांत जल जैसा
अचानक.....
बैसाख का दुपहरी सूरज
कागज़ को जलाकर राख कर देता है
और मेरे हाथ में
काँप जाता है ब्रश–
मेंढक की चित्कार
मौसम के सपने
सपनों का मौसम
सभी कुछ भाप हो जाना।

हम

हम ज़िंदगी के ज़िगरी यार हैं
हम छलकता हुआ प्यार हैं।

कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं,
हम मनमौजी दरबार हैं।

मन होता है तो हम उड़ते हैं,
या दरिया में जा हम डूबते हैं।

हम पर्वत के ऊपर से सूरज बन
मध्य रात्रि को भी उगते हैं।

किसी की निंदा नहीं, संकोच नहीं,
हम प्यार की बहती धारा हैं।

बुद्धिमान हमें पागल कहते हैं,
वे सच्चे! हम गलत नहीं।

एक विशाल दरिया उछलता है,
हम फूट जाएँ ऐसे बुलबुले नहीं।

हमारा कहाँ कोई किनारा है,
हम तो दरिया की मझधार हैं।

ISBN : 978-93-82695-17-2

© : लेखक

मूल्य : दो सौ पचास रुपये

प्रथम संस्करण : 2014

प्रकाशक : **विकल्प प्रकाशन**
2226/बी, प्रथम तल, गली नं. 33,
पहला पुस्ता, सोनिया विहार,
दिल्ली-110094
मोबाइल : 9211559886

आवरण : अमरीष बी. पंचाल

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

AANKH YE DHANYA HAI : A collection of poems written in Gujarati by **Narendra Modi**, The Respected Prime Minister of India. Translated by **Dr. Anjana Sandhir**

विलाप

तेरे बारे में जाना
और मन के हिमालय को
धक्का लगा
तुझे देखा और मेरी आँखों में
चाँद उगा
मेरे अंदर
चंदन का पेड़ महका
तू मिला और मेरे रोम-रोम में
सुगंध के पहाड़ हिल उठे
परंतु हाय....!
ये पहाड़ पिघल रहे हैं
चंदन की महक
इन्हें जला रही है
और राख हो गई है
सपनों की सौगात
दूर किनारे
मेरी आँखों का चाँद
क्षितिज पर जा बैठा है
तेरे बिना
मेरी नाव को किनारे ले जाए
ऐसा माँझी कब मिलेगा?

सम्पूर्ण विश्व

कल के रास्ते का अंत आ गया
उसकी तीक्ष्ण नोंक पर उगा है
आज की सुबह का वृक्ष
हवा की डाली पर झूलता है
किरण का फूल
कोई इच्छनीय भूल करनी हो जैसे
पक्षी शांति से जीते, गाते हैं
मैं खोल देता हूँ सब खिड़कियाँ
अस्तित्व इतना सुंदर कभी नहीं लगा
मैं अपने शरीर को
मन को, हृदय को
प्रभु का प्रसाद ही मानता हूँ,
और सम्पूर्ण विश्व मानो
मेरी आगोश में समा जाता है।

आज

ये था, वो था,
ऐसा था, वैसा था,
यहाँ था, वहाँ था–
यहाँ था
था की मन में हवा
खण्डहरों के खण्डित वैभव
और गलियों में
कहाँ उलझे रहते हैं हम
परछाइयों के प्रेत की तरह।

भूतकाल मानो
भूत-प्रेत की छाया लेकर
भटकती इतिहास की
आत्मा
आत्मा अमर है.....
अमृत्व को भी
चाहिए
वर्तमान की
काया।

आने वाले कल में
अमर होने के लिए
बीते कल का इतना
मोह रखकर
आज को
आँखों समक्ष धोखा देकर
जीने का कोई अर्थ है?

●

हम तो

संध्या बेला, मैं मनमौजी रहूँ अकेला,
मेरे इस तन-मन में उभरे तरणेतर का मेला।

किसी से कुछ लेना-देना नहीं,
कभी नहीं होगा मेरा-तेरा
इस दुनिया में जो कुछ भी है,
वो है मन पसंद हमारा।

रास्ता मेरा सीधा-साधा, नहीं भीड़ नहीं कोलाहल
संध्या बेला, मैं खानाबदोश रहूँ अकेला।

कोई पंथ नहीं, ना ही सम्प्रदाय :
मानव तो बस है मानव,
उजाले में क्या फ़र्क पड़ता है,
दीपक हो या लालटेन।

बड़े-बड़े झूमर की तरहाँ, कभी नहीं हैं लटके,
संध्या बेला, मैं खानाबदोश रहूँ अकेला।

आफ़त

सोलह बरस की रूपवती कन्या जैसी नदी
आज क्रोधित हो बाघिन हो गई है
वर्षा के कारण वो बेहद उच्छृंखल हो गई है
उसे किसी की लाज, शर्म नहीं है
अपना संयम गँवा
पागल स्त्री की तरह
अजीब सा व्यवहार कर रही है
और शायद उसे खुद भी ख़्याल नहीं होगा
कि उसका
जल इतना निष्ठुर, कठोर हो सकता है
कि गाँव के गाँव डुबाता है,
तरती हैं कितनों की लाशें
कितनों के डूबे हैं साँस,
आखरी चीख, असहायता.....
जल में जल होकर
बह रही है,
विनाश करती प्रकृति
हमें अपना विकृत परिचय देती है
हाँ, जल के जानलेवा जुनूँन का।

●

आस

उजाले की आस लेकर
अँधेरा उलीचा
मैंने अँधेरा उलीचा।
उजाले की चमक लेकर
अँधेरा उलीचा
मैंने अँधेरा उलीचा।

काल चक्र की कालिमा को भेदा
उजाले की अब नहीं कोई सीमा।
ज्योति आज प्रकट उठी ऐसे
मानो नवरंगी परोंवाला
उजाला ही उजाला
आज उजाला ही उजाला
उजाले की आस लेकर, अँधेरा उलीचा।

गति एक, मति भी एक
और प्रगति का पंथ भी एक
दृढ़-निश्चयी और दृढ़-नीतिमत्ता
है जीवन भर का एक ही वेश।

बुरे साथ को तो सदा के लिए
लगा दिया है ताला
उजाला-उजाला
उजाले की आस लेकर, अँधेरा उलीचा।

यश कीर्ति की कोई भूख नहीं
कोई पसंद, ना पसंद नहीं
रही हृदय में सदैव क्षमा
हृदय तल का राम ही रखवाला
उजाला-उजाला
उजाले की आस लेकर
अँधेरा उलीचा।

उष्मा का अभाव

उष्मा बिना मानव जैसा मानव भी
यहाँ हाँफता है
मनुष्य जैसा मनुष्य किस लिए
एक दूसरे को श्राप देता है ?

पानी को उष्मा न मिले तो
पेड़-पौधे, पत्ते सूख जाते हैं
पतझड़ के वृक्ष पर बैठ
फिर कोयल कैसे पंचम गीत गायेगी ?

मानव-मानव को थपथपाकर
फिर क्यों करता अवज्ञा है?
उष्मा बिना मानव जैसा मानव भी
यहाँ हाँफता है।

बिना प्रेम पंगु बन मानव, लाचार
पराधीन-सा जीता है
अभाव की एक डोरी ले,
पल को पल से सीता है।

मुस्कराहट की छुरी लेकर,
चुपचाप मानव आँसू को काटता है
उष्मा रहित मानव जैसा मानव भी
यहाँ हाँफता है।

उठो लाल ! विजय स्वीकारो

वसुधा की है मुश्किल बेला
लोगो सब हो जाओ इकट्ठे
आज विजय का करो स्वागत
आओ, आज विजय का करो स्वागत

ईर्ष्या-द्वेष को छोड़
खुश्बू भरी मिट्टी बनकर
उठो जागो, दौड़ो, दौड़ो
एक-दूसरे के साथ रहो
मत रहना अकेला
वसुधा की है मुश्किल बेला।

पीड़ित मानव, आर्द्र जीवन
मन का बना पद्मासन
चेहरा भिन्न है समाज का
लेकिन नहीं अनोखा
पर अपना अंतर भरा हुआ है
वसुधा की है मुश्किल बेला।

धरती की धूल को माथे पे लगाओ
मत बैठो हिंडोले पर
चलो, चलो किसी नई राह पर
सपने कुछ सजे हैं
वसुधा की है मुश्किल बेला।

मिट्टी सने पैरों का काम नहीं यहाँ
है यहाँ वीर सपूत का धाम
गगनभेदी जयघोष के साथ है
तरणेतर का मेला
वसुधा की है मुश्किल बेला।

माँ सरस्वती की
साधना के
उत्तम पुष्प समान
अपनी
मातृभाषा को....

नरेन्द्र मोदी

उठो वीर

नींद की चादर ओढ़कर
सोते रहे शरीर
वीर तुम उठो, जागो
ताकि चमकता रहे खमीर।

आसमानी आग का
धधकता जाल वह लाया है...
भाले से बिंधे ऐसी किरणों को
ढाल बनकर दो चुनौती

देवी कामाख्या की–
चीत्कारों को कानों में भर के सुनो
उससे पहले जागो तो
कुछ किया कहलायेगा,
उससे पूर्व उठो.....

रुक्मिणी का रुदन सुनकर
द्वारकानाथ बनकर दौड़ो,
अपने पास समय रहा है थोड़ा
सुदर्शन चक्र लेकर दौड़ो
अब बाँसुरी बन के न बजो
ओ वीर अब तो जागो!

हाँ, वाणी चिथड़े हाल बन जाए
उससे पहले दौड़ो और जागो

ताकि मानवता को कहीं
लग न जाए कोई दाग।

स्वप्न....
आग की राग में
कुचले गये हैं....
अंधे राहगीरों से
मत पेटी, मौत की पेटी बनी है
मत नहीं, सिर धरे हैं

हिमालय की कोख में जंगली आग लगी है
इस जंगली आग को मिटाने दौड़ो
और ईश्वर कृपा माँगो।

ओ वीर! अब तो जागो
आसाम काँप रहा है
वध होते बच्चों की चीत्कार से
निःसहाय बनी हुई है सप्तभगिनी,
चिता पर जलती
उठो...वीर और धीर....
आसाम ही नहीं
देश का कल जला है
उठो वीर और धीर
कायरता शरीर में समा जाये
उससे पहले उठो....
वीर अब तो जागो !

एकाध आँसू !

सम्बन्ध आएँ, आ-आ के बह जाएँ,
छोड़ जाएँ आँखों में एकाध आँसू

ठण्डे हुए आँसू में पत्थर का भार है,
कोने पे सितार, जिसके टूटे सब तार हैं।
तरंगें लू बन जलती हैं, कहीं नहीं जातीं
आँखों में बस एकाध आँसू रह जाए।

काँच के टुकड़े कब तक बचा के रखोगे,
आशाएँ, अपेक्षाएँ इतनी कि याचना होती नहीं,
बहते हुए पानी में हस्ताक्षर होते नहीं हैं
आँखों में बस एकाध आँसू रह जाए।

शीतल संबंध मुझे भयानक से लगते हैं,
फूलों के रास्तों पर काँटे चुभते हैं,
इस वन के एकांत में, अब कोई नहीं आयेगा।
आँखों में बस एकाध आँसू रह जाए।

●

ऐसे मनुष्य

बोलना हो जहाँ वहाँ बोले नहीं
और न बोलना हो वो बोले
ऐसे मनुष्य होते हमेशा
तिनकों जैसे तोल के।

आवाज़ की आँखें उठाओ
और जो कहना है, कह डालो
रहस्यपूर्ण चुप्पी के आडम्बर को
उष्मा भरी आँच से जलाओ
कभी बैठना नहीं हमें खुशामद की गोद में
बोलना हो जहाँ वहाँ बोले नहीं
और न बोलना हो वो बोले।

किसी की निंदा सुनना
और चुप रहना, पाप है
सत्य बोल स्वीकार करे जो,
उसके सब गुनाह माफ़ हैं
पवन की लहर में, वृक्ष का गौरव
मस्त होकर डोले
अनंत काल से प्रकृति में
कोई झूठ न बोले।

उत्सव

पतंग...
मेरे लिए ऊँची उड़ान का उत्सव
मेरा सूरज की तरफ़ का अभियान

पतंग
मेरे जन्म-जन्म का वैभव
मेरी ही डोर, मेरे हाथ में
पृथ्वी पर पैर
और आकाश में
कोई पक्षी हो ऐसा
मेरा पतंग....

अनेक पतंगों के बीच भी
मेरा पतंग उलझता नहीं
किसी वृक्ष की डालियों में,
कहीं फँसता नहीं
पतंग.....

मानो मेरा गायत्री मंत्र
अमीर हो, धनवान हो या गरीब हो–
सभी को "कटे पतंग" एकत्र करने का आनंद होता है।

यह आनंद भी
अद्‌भुत, अनोखा
कटे हुए पतंग के पास

आकाश का अनुभव है
हवा की गति की दिशा का ज्ञान है
खुद एक बार ऊँचाई पर गया,

कुछ देर वहाँ रहा
इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

पतंग....
मेरी सूर्य तरफ़ की यात्रा
पतंग की जान डोर में
पतंग का शिव व्योम में
पतंग की डोर मेरे हाथ में
मेरी डोर शिवजी के हाथ में
पतंग के लिए हवा का मार्ग
शिवजी बैठे हिमघाट
पतंग के सामने मानव से अधिक ऊँचे
पतंग उड़ती है शिवजी की गोद में
और मानव जमीन पर बैठा
गुंजलें निकालता है।

कारगिल

कारगिल
पहले भी गया था,
टाइगर हिल
पहले भी देखी थी
तब
राजाधिराज के
श्वेत मौन को
जी भर कर देखा था

आज
हर चोटी
गर्जती थी
बोम्ब, बंदूक की गूँज से
बर्फ़ की शिलाओं पर
धधकते अंगारों जैसे
सेना के जवानों को देखा
यहाँ
हर जवान
किसान था
जो अपने आज को बीज रहा था
अपने खून से सींच रहा था
ताकि
हमारा कल
मुरझा न जाए।
हर जवान की आँख में

उमड़ते सौ करोड़ सपने देखे
अपनी आँख की पलक से
मौत को जकड़ने वाले
वीर देखे
और यमराज को,
इन वीरों के चरण चूमते हुए
देखा था।

धधकते अंगारे समान
वीर जवानों की गर्म साँसों से
पिघलती बर्फ़
झरना बन बहती थी
झरने की गति में
समाया था
सुजलाम्
सुफलाम्

भारत का भाव और
झरने की कोख से
फूट रहा था
वंदेमातरम् का गान।

क्रियापद

मेरे आस-पास
खींचो एक शब्दों का चक्र
फिर उस चक्र को चोरस करो
फिर उस चक्र के चोरस में जड़ो रंग-बिरंगे
कंचों जैसे शब्द–
शब्द तरल कंचों जैसे
काँच के शब्द :
साच के शब्द : आँसू जैसे
अथवा पूर्ण विराम जैसे।

विशेषणों के आस-पास
खींचो लक्ष्मण रेखा
रखो मर्यादा राम की
नाम के आस-पास खेला करो
शून्य-गुणा का खेल
और क्रियापद को रखो केन्द्र में
और फिर बनाओ
एक अनंत चक्र।

स्वाभिमान

"झूठ बोले, कौआ काटे"
इसलिये हमें सत्य बोलना जरूरी है
सत्य ही तो हमारा स्वाभिमान है
मजबूरी नहीं है।

सत्य नहीं बोलें
तो कोयल की कुहूक को
मरी हुई मच्छली की तरह
कौआ चोंच मार-मार कर नष्ट कर देगा।

अफ़वाहों पर आधारित समाचार
सुबह-सवेरे उगते हैं काले सूरज की तरह

सत्य से सत्याग्रह तक की
अपनी यात्रा में
हमें मिलते हैं
बिना पैर चलते
प्रवासियों के पद्चिन्ह
केवल भीड़, टोलियाँ।

प्राक्कथन

सारी दुनिया के हर खास और आम आदमी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर अपने-अपने दृष्टिकोण से, अपने विचार प्रकट किए हैं, उन्हें सराहा है। उनके व्यक्तित्व के बहुत से पहलुओं पर अपनी टिप्पणी भी दी है लेकिन उनके व्यक्तित्व का एक पहलू है सूक्ष्मदृष्टा और एक संवेदनशील कवि होना। मातृभाषा गुजराती में वे अच्छी कविताएँ लिखते हैं जिन्हें पढ़कर उनके व्यक्तित्व की बहुत-सी खिड़कियाँ खुलती हैं। गुजराती भाषा में उनकी कविताओं का संग्रह "आँख आ धन्य छे" (आँख ये धन्य है) सन् 2007 में प्रकाशित हुआ था। जिसमें उनकी 67 कविताओं के साथ-साथ सुन्दर चित्र भी प्रकाशित हैं, जो मन को लुभाते हैं।

सक्रिय पत्रकार होने के नाते मेरा परिचय श्री नरेन्द्र मोदी जी से उस समय से है जब पहली बार कश्मीर में झण्डा फहरा कर वे लौटे थे और अहमदाबाद की एम.जे. लायब्रेरी के बेसमेन्ट में भारतीय जनता पार्टी द्वारा एक विशेष मीटिंग का आयोजन था जिसमें शहर के विशिष्ट विद्वानों, लेखकों और कुछ खास पत्रकारों को निमंत्रण दिया गया था। इस मीटिंग में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, गुजरात से एम.पी. श्री हरिन पाठक तथा बी.जे.पी. के कार्यकर्ता शामिल थे, जिसमें श्री नरेन्द्र मोदी, युवा कार्यकर्ता की पीठ थपथपाई गई थी, क्योंकि यह मुश्किल काम उन्होंने कर दिखाया था। इस मीटिंग में एक लेखक व सक्रिय पत्रकार के रूप में मुझे भी आमंत्रण-पत्र प्राप्त हुआ था। सन् 1995 में विवाहोपरांत मैं अमरीका चली गई थी। इस दौरान मोदी जी की राजनैतिक प्रतिष्ठा बढ़ती चली गई और वे गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री बन गए।

मैं अमरीका से हर दो साल बाद भारत आती रही। मैं हर स्वदेश यात्रा में उनसे एक शुभेच्छा मुलाकात अवश्य करती थी और अमरीकी हिन्दी साहित्य की जो पुस्तकें जब-जब मैंने सम्पादित कीं, मैं उन्हें अवश्य भेंट करती थी, वे मेरे काम को सराहते भी थे।

न्यूयार्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाते-पढ़ाते फिल्मी गीतों का उपयोग कर हिन्दी सिखाने की एक नई पद्धति मैंने ढूँढ़

गति का गीत

गोधूलि की धूल
संध्या के सूरज की साँस को कहाँ तक रोंदेगी?
सूरज की तीक्ष्ण साँस
सर्दी की सुबह को कब तक काटेगी?
दोपहर का सूरज
काली सड़क को कहाँ तक तहस-नहस करेगा
अब तो रुक जाओ....

मेरे सूखे खेत में
गाँठें उगाना बंद करो
किसी के मक्खन जैसे कोमल पैरों में से
ये गाँठें खून चूसने लगें
उससे पहले बंद करो...

मुझे पनिहारिन के मटके पर से
गुजरती किरण के गीत गाने हैं
भरी दुपहरी में पसीना बहाते
श्रमिकों के पसीने से चमकती
किरणों के
गीत गाने हैं
मुझे छुट्टी रखनी है
बच्चे के मक्खन जैसे नरम पैरों से
उड़ते रजकणों व गोधूलि की धूल से
मुझे एक अलबम बनाना है
मुझे गति का चित्र खींचना है

प्रगति का रूप बनाना है
इस चित्र के रंग-रूप में दाग हैं।
ये दाग
गति-प्रगति के बेडोल
असुंदर रूप ही हैं न?
ये और कुछ नहीं हैं
हमारे द्वारा उगाई गई
सूखी गाँठों का ही परिणाम है।
कोमल मक्खन जैसे पाँवों से उड़ी धूल
उसी के खून से लथपथ है
इसीलिये ही दाग़ हैं।
अपनी गति, प्रगति की
यही तो निशानी है।
अब.....
इस दाग़ को रूप में खपाना बंद करो
मुझे तो मध्याह्न के तपते सूरज का
गीत गाना है
उन्हीं बच्चों में तेज पैदा कर
तुम इन्तज़ार करो
इसके बाद के अलबम में दाग़
नहीं होंगे
परंतु हाय....
उसके पहले तो कितने ही बच्चों का
गरम-गरम खून
इन गाँठों को जलाने के लिए
बहा होगा...।।
इसीलिए कहता हूँ
गाँठें उगाना बंद करो
मुझे गति-प्रगति का गीत
गाना है....।

गरबा

गाये उसका गरबा
उसमें ताल मिलाए उसका गरबा
गरबा गुजरात की आनुवांशिक जागीर है।

घूमे उसका गरबा
और झूमे उसका गरबा
गरबा गुजरात की आनुवांशिक जागीर है।

सूर्य चन्द्र गरबा,
और ऋतुएँ भी गरबा
गरबा गुजरात की आनुवांशिक जागीर है।

दिन भी गरबा
और रात भी गरबा
गरबा गुजरात की आनुवांशिक जागीर है।

संस्कृति गरबा
और प्रकृति भी गरबा
बाँसुरी है गरबा, मयूर पंख है गरबा।

गरबा मति है,
गरबा सहमति है
वीर का भी गरबा, अमीर का भी गरबा।

काया भी गरबा और
आत्मा भी गरबा
गरबा जीवन की सुगम-सी शांति है।

गरबा सती है और
गरबा गति है
गरबा नारी की फूल-सी पूंजी / शक्ति है।

गरबा सत है और
गरबा अक्षत है
गरबा ही माता जी का आनंदमय सिंदूर है।

●

गीत में

पक्षी के पंखों में आया हुआ गीत
कि गीत में कोयल और बुलबुल भी बोले
उसके एक पंख में धरती के प्राण हैं
और दूसरा पंख आकाश को तोले।

अपने काग़ज़ पर सूरज बनाता हूँ
और बनाता हूँ पूनम का चाँद
मेरे काग़ज़ पर लहराता वृक्ष है
और वृक्ष पर हरियाले पत्ते
स्वजन की याद जैसी छोड़ी चट्टान
उसे झरने का गीलापन जगाए।

एक तरफ़ रेगिस्तान और दूसरी तरफ़ दरिया,
तीसरी तरफ़ नदियों की लिपि,
कण्ठ में तो ऐसी एक प्यास है श्रेष्ठता की
जो छुपाए नहीं छुपी।

आँखों में आकाश को उठा कर चलुँ
लेकिन बैठा हूँ मैं धरती की गोद में।

●

गुलछड़ी

गहरी, बदसूरत खाई पड़ी है
मानव को मानव की कैसी
अफ़रातफ़री हर घड़ी है।

मुझे तो सेतु बनना है
प्रेम का हेतु बनना है
गर मानव-मानव से मिले तो
अजब-गज़ब सी अनंत घड़ी है।

पहेली में बुनने का अर्थ नहीं रे
गुलाब होकर उगना यहाँ व्यर्थ नहीं रे
मुश्किलें हुईं सब दूर और हमें
एक गुलछड़ी मिली है।

गौरव

मुझे सदा से गर्व है कि मानव हूँ और हिन्दू हूँ
पल-पल ऐसा अनुभव होता है,
कि विशाल, विराट सिंधु हूँ।

किसी को भी घटाता-बढ़ाता नहीं
बस करता हूँ सबको जमा
पसंद है मानव मात्र का सहवास
चाहिए प्रेम भरी उष्मा
नर्मदा का पानी मेरे खून में
मैं फूल पर टिका एक ओस बिन्दु हूँ।
मुझे सदा से गर्व है कि मानव हूँ और हिन्दू हूँ।

आँख चाहे छोटी लगे
पर दृष्टि हो विशाल
सम्प्रदाय की कोई गली नहीं
पर विभिन्न स्कूल होते हैं
सूर्य, बादल, ग्रह, नक्षत्र
मैं अपने तेज का इन्द्र
मुझे सदा से गौरव है
कि मानव हूँ और हिन्दू हूँ।

छोड़ो

काया छोड़ो, माया छोड़ो
वस्तु और परछाईं छोड़ो
किले तोड़ो, पिंजरे तोड़ो
सपने नरम-सुकोमल छोड़ो।

रात की भटकन और आवारापन
रात की बड़बड़ाहट बिल्कुल अकेली।
वाणी छोड़ो, अर्थों को छोड़ो
भ्रमों की भी नींवें तोड़ो।

कोई नहीं तो ना सही
और कोई है तो भी नहीं-नहीं
इस चर्चा की कश्मकश छोड़ो
नहीं के पथ को हल्का ओढ़ो।

जाना नहीं

यह सूर्य मुझे पसंद है
अपने सातों घोड़ों की लगाम
हाथ में रखता है
लेकिन उसने किसी भी घोड़े को
चाबुक मारा हो
ऐसा जानने में आया नहीं

इसके बावजूद
सूर्य की मति
सूर्य की गति
सूर्य की दिशा
सब एकदम बरक़रार
केवल प्रेम !

छत्र-छाया

सफ़ल हुआ तो ईर्ष्या का पात्र
असफल हुआ तो दया का पात्र
सफलता-असफलता से पार होकर
तीसरे किनारे मात्र खड़े रहो।

कायरता मन में समाती नहीं
और गरीबी की क्यों हो परवाह?
जीवन सम्पूर्ण जीकर
मैं चाहता हूँ मरना।

ईश्वर की छत्र-छाया में हर रोज सीखता हूँ
मैं तो हूँ एक छात्र
सफल हुआ तो ईर्ष्या का पात्र,
असफल हुआ तो दया का पात्र।

निंदा का ये खारा दरिया
स्मृति की मधुर मीठी वाणी
दोनों ही बेकार छावनियाँ हैं
हमें तो बनाये रखनी है न टूटे ऐसी कड़ी

प्रार्थना बस इतनी युद्ध भूमि में
काँपे नहीं ये शरीर
सफल हुआ तो ईर्ष्या का पात्र,
असफल हुआ तो दया का पात्र।

निकाली और एक पुस्तक लिखी Learn Hindi And Hindi Film Songs. क्योंकि विदेशों में छात्रों को हिन्दी शास्त्री बन के नहीं सिखाई जा सकती। यह पद्धति बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हुई, क्योंकि हमारे फिल्मी गीतों में भाषा, परिवेश के साथ-साथ व्याकरण भी है, जैसे--

"सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था
आज भी है और कल भी रहेगा।"

इन दो लाइनों में तीन काल आते हैं :

वर्तमान काल : ता, ते, ती	Present Tense
भूतकाल : था, थे, थी	Past Tense
भविष्य काल : ग, गे, गी	Future Tense

था	है	और	गा
was	is	and	will

ब्लैकबोर्ड पर ये खाका बनाकर जब गीत सुनाती तो कक्षा जीवंत हो उठती, छात्र आसानी से काल सीखते, गीत भी सीखते। इसी तरह गीत :

"मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिशतानी
सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दोस्तानी"

इस गीत में राष्ट्रीयता सूचक शब्द आते हैं, जापान से जापानी, इंग्लिशस्तान से इंग्लिशस्तानी, रूस से रूसी और हिन्दोस्तान से हिन्दोस्तानी।

विदेशों में बसी हमारी नई पीढ़ी के लोग गीतों का बहुत आनंद लेते हैं मगर उन्हें इन गीतों के अर्थ पता नहीं होते, इसी मकसद से "आओ सीखें हिन्दी व हिन्दी फिल्मी गीत" वहाँ के आर.बी.सी. रेडियो पर एक कार्यक्रम मैं होस्ट किया करती थी जिसमें हर हफ़्ते एक गीत, उसके महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ तथा बाद में गीत का अनुवाद प्रस्तुत कर, आखिर में गीत रेडियो पर बजाती थी। कार्यक्रम के अंत में आज के तीन शब्दों का अंग्रेजी अर्थ बताती थी जैसे 'हेलो' को हिन्दी में नमस्ते/ नमस्कार कहते हैं। 'गुडनाइट' को शुभ रात्रि कहते हैं तथा थैंक्यू को धन्यवाद या शुक्रिया कहते हैं। यह कार्यक्रम इतना प्रख्यात था कि "दस मिनट" के इस रेडियो शो में आधा घंटा तक बाद में घंटियाँ बजती रहती थीं कि अगले हफ़्ते ये या वो गीत बजाइयेगा। लोगों की बधाई व ढेरों शुभ कामनाएँ मिलतीं कि वो अब गीत का अर्थ जान पाये हैं तो गीत का आनंद और बढ़ गया है।

बोले बसंत

अंत में आरंभ और आरंभ में अंत
पतझड़ के दिल में चहके बसंत

उम्र सोलह साल,
कहीं कोयल की लय
टेसू के फूलों का छलके किस पे प्रेम
चाहे लगते हों रंक
पर हैं अंदर से श्रीमंत
पतझड़ के दिल में चहके बसंत

आज तो वन में किस का विवाह
एक-एक वृक्ष में प्रकटे दिया
आशीर्वाद देने को आते हैं संत
पतझड़ के दिल में चहके बसंत।

तुम्हें मुबारक

जल को तुम पत्थर कहते हो
या पत्थर को जल
या बादल को आकाशी सलवटें कहते हो
या कमल को बबूल कहते हो
इससे किसी को कोई फर्क़ नहीं पड़ता है।

तुम अफ़वाह को सत्य कह सकते हो
और दिन को रात
बसंत को पतझड़
और समुद्र को रेगिस्तान
या जीवन को मृत्यु कह सकते हो।

ये सब तुम्हारी वाणी का व्यभिचार
तुमको मुबारक
क्योंकि—
प्रकृति तो रहती है
वैसी की वैसी ही
स्वस्थ और तटस्थ।

तस्वीर के उस पार

मैं अपनी तस्वीर में हूँ और नहीं भी
मैं अपने पोस्टर में हूँ और नहीं भी
इसमें कोई विरोध
या विरोधाभास नहीं है।

तस्वीर आत्मा जैसी नहीं है
ये तो पानी से भी भीग जाती है
अग्नि से जलती है
वो भीगे या जले
तब मुझे कुछ नहीं होता।

तुम मुझे
मेरी तस्वीर अथवा पोस्टर में
ढूँढ़ने की व्यर्थ कोशिश मत करो
मैं तो पद्मासन की मुद्रा में बैठा हूँ
अपने आत्मविश्वास में–
अपनी वाणी और कर्मक्षेत्र में।

तुम मुझे मेरे काम से ही जानो
कार्य ही मेरा जीवन काव्य है।
काव्य में छंद का है बंधन,
लय ताल भी है।
जबरदस्ती गीता सार
दरवाजे पर कर्म धार
तुम सबके लिए अकारण

भीगा कुँवारा स्नेह है।

तुम मुझे छबी में नहीं
लेकिन पसीने की महक में पाओ
योजना के विस्तार की महक में ठहरो
मेरी आवाज़ की गूँज से पहचानो
मेरी आँख में
तुम्हारा ही प्रतिबिम्ब है।

दृश्य

वृक्षों के बाग़-बगीचे
बैठा हूँ इक पेड़ के नीचे
हरियाली ये घास पवन में झूले
पतंगा पंख खोले और मींचे
अपनी गुंजन में भँवरा
फूल का रस सींचे

उड़ते इन दृश्यों के साथ
आँख मिले और
साँझ ढले
और मेरे अंदर एक पूरे का पूरा वृक्ष खुल जाता है
अँधेरे में खिलते हैं तारे फूलों जैसे
भँवरों के पंख लगा मैं तो पवन में तैरता
मानो कोई जुगनूँ मंद-मंद प्रकाश लेकर गूँजता है
एक सुगंधित सुमधुर गीत की तरह
सम्पूर्ण—सारी प्रीत लेकर
हरियाली ये घास हवा में
मेरे बाग-बगीचे में।

देह का काम देह करे

देह का काम देह करती है, मन करता है मन का काम
अविनाशी के उपवन में, मैं तो देखा करता हूँ सीता राम।

वाणी के बिना वीणा बजती है
मध्यम-मध्यम सुर जगते हैं

हृदय मेरा रटता रहता है बस इक सुंदर तेरा नाम
देह का काम देह करती है, मन करता है मन का काम।

देह, मन और हृदय में उछलता है
भविष्य के सत्ताईस नक्षत्रों का बीज
आँखों में एक सृष्टि मेरी
तरती और आकर्षित करती
मेरी एक अयोध्या : जिसमें
रघुपति राघव राजा राम

देह का काम तो देह करती है
मन करता है मन का काम।

नर्मदा

नर्मदा सिर्फ़ एक नदी नहीं है
हमारी सदी-दर-सदी की साधना है,
अमर आराधना है।

नर्मदा नक़्शे पर बनी एक लकीर नहीं है
वह गुजरात की हस्तरेखा है
प्रजा की भाग्य विधाता है।

नर्मदा के स्वच्छ जल पर
मैली चादर डालने की कोशिश भी करोगे
तो तुम्हें कबीर की सौगंध
यह नर्मदा
गाँधी जी, नर्मद और मुंशी की है
सरदार की स्वप्न सरिता है
नर्मदा
गुजरात की अस्मिता है
नर्मदा कुलदेवी है
नर्मदा वरदायिनी है।

जिंदा दिल

भाग्य को कौन पूछता है यहाँ?
मैं तो चुनौती स्वीकारने वाला मानव हूँ।
मैं तेज उधार नहीं लूँगा
मैं तो खुद ही जलता हुआ लालटेन हूँ।

मैं किसी का मोहताज़ नहीं
मुझे मेरा उजाला पर्याप्त है।
अँधेरे की लहरों को काटे
कमल के तेज-सा स्फूर्तिवान है।

कोहरे में मुझे रुचि नहीं
मैं तो उन्मुक्त, जिन्दा दिल हूँ।
भाग्य को कौन पूछता है यहाँ?
मैं तो चुनौती स्वीकारने वाला मानव हूँ।

कुंडली को थामे रहना पसंद नहीं
और ग्रहों समक्ष झुकता नहीं सिर।
कायरों की शतरंज पर
सौदेबाजी खेलता नहीं।
मैं खुद ही मेरा वंशज हूँ
मैं खुद ही मेरा वारिस हूँ।
भाग्य को कौन पूछता है यहाँ,
मैं तो चुनौती स्वीकारने वाला मानव हूँ।

ललकार

धरा की पुकार है
गगन की पुकार है
पथ भूले हुए पंथ हैं
और पार्थ को ललकार है।

सम्प्रदायों में बँटता मानव
मानव से बनता है दानव
हुंकार, हो-हल्ले से
हुए हैं बहुत से हंगामे यहाँ
अभिमान की खड़ी दीवारें हैं यहाँ
और सपनों का संहार है
ललकार है, पुकार है।

समानता की बातें, बातें ही रहीं
और एकता ही पिसती गई
संविधान के बंद दरवाज़े और
ईर्ष्या-द्वेष की खाई रह गई
आँसू चारों ओर हैं
और सब जगह अंधकार है
ललकार है, पुकार है।

तन भूखे हैं, मन टूटे हैं
मानव-मानव से रूठा है
अहम नहीं पर वय का सागर
उछल रहा है अरे बिरादर

दीवारों को तोड़ने के लिए
आँखों में अंगार है
ललकार है, पुकार है।

खण्डहरों में से ढूँढो सपने
जीने के लिए अतिशय ज़रूरी
बीते कल को भूलकर
आज हृदय से खुलकर
क्षितिज को विस्तृत बनाकर
डूबे हुओं को तार कर
एक दूसरे का ले आधार
उजाले का अवतार है
ललकार है, पुकार है।

यह पुस्तक "लरन हिन्दी एन्ड हिन्दी फिल्म सोंग्स" बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई और न्यूयार्क लाइफ इन्श्योरेंस कम्पनी ने अमरीका में हिन्दी के प्रसार हेतु इसे चुना। कम्पनी ने दस हजार पुस्तकें व सीडी सारी अमरीका में मुफ्त वितरित कीं। इस पुस्तक ने एक आंदोलन शुरू कर दिया और लोग सोचने लगे कि उनके बच्चों को हिन्दी सीखनी ही चाहिए। अपनी भारत यात्रा के दौरान मैं श्री नरेन्द्र मोदी जी से मिली तो यह पुस्तक व सीडी मैंने उन्हें भेंट स्वरूप दी। उन्होंने पुस्तक को बड़े ही ध्यान से देखा और मेरे काम को सराहा, इतना ही नहीं उन्होंने अपने भी विदेश यात्राओं के कुछ अनुभव सुनाए। उन्होंने बताया कि मॉरीशस, गयाना, त्रिनीडाड के भारतवंशियों के घरों में फिल्मी गाने बजते रहते हैं, क्योंकि वे भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना चाहते हैं चाहे उनके अर्थ उन्हें नहीं पता हैं लेकिन उनकी भावनाएँ आज भी भारत की आस्था में ऐसे ही डूबी हैं। उन्होंने अपने कई अनुभव सुनाकर पुस्तक के लिए बधाई दी व मेरा हौसला बढ़ाया, जिसका सुखद परिणाम ये आया कि अमरीका से मैंने कम्पनी द्वारा उन्हें पाँच सौ पुस्तकें फ्री भिजवाईं, जिन्हें "प्रवासी भारतीय दिवस" समारोह के दरम्यान "गुजराती परिवार महोत्सव" में भाग लेने विश्व के कोने-कोने से गुजरात पधारे प्रवासी एन.आर.आई. के लिए गुजरात सरकार द्वारा भेंटस्वरूप दिए गए गिफ्ट पैकेट में यह पुस्तक व सीडी दी गई। यह मोदी जी की अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी व संस्कृति के प्रति प्रेम दर्शाता है।

सन् 2006 में अमरीका से पन्द्रह युवक-युवतियाँ न्यूयार्क लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी द्वारा आयोजित स्पर्धा में जीतकर भारत यात्रा 2006 में गुजरात आये थे जिसमें मैं होस्ट थी। दो हफ़्ते की इस यात्रा में हमें गुजरात भ्रमण करना था और फिल्म भी बन रही थी। इस यात्रा के दौरान मोदी जी ने लगभग एक घंटा दस मिनिट का समय हमें दिया। अहमदाबाद में कर्णावटी क्लब में आयोजित इस मीटिंग में एन. आर. आई. तथा अमरीकी विजेता युवक-युवतियों ने तरह-तरह के सवाल पूछे थे जिनका बड़ा सधा उत्तर उन्होंने दिया था। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, "हमें तुम्हारे डालर नहीं चाहिए, हाँ अगर आपके मन में भारत के लिए कुछ करने की इच्छा है तो आप में से हर एक व्यक्ति एक-एक परिवार को "भारत यात्रा' पर भेजे, बहुत काम हो जायेगा। मुझे याद है उस समय भी उन्होंने "गुजरात भेजो" ऐसा नहीं कहा था, "भारत भेजो" ये कहा था जो उनका विशाल दृष्टिकोण दर्शाता है।

सन् 2007 में अपनी बेटियों को भारतीय संस्कार मिलें तथा वे अपनी जड़ों से जुड़ें इस भावना से मेरी भारत वापसी हुई। अमरीका में जन्मी मेरी बेटियों के लिए भारत एक विदेशी भूमि थी, अतः मैं उन्हें यहाँ स्थाई करने में व्यस्त हो गई और अपने लेखक-पत्रकार मित्रों से भी मिलती रही। इसी दौरान श्री मोदी जी की कविताओं का

तितली

फूल पर बैठे, बैठते ही उड़ जाए
तितली फिर रंगों में डूब जाए।

आस-पास खुल जाता खुशबू का तालाब
उसमें तैरती तितली मानो कोई नाव।

सुख का कोमल सूरज उग जाए
फूल पर बैठे, बैठते ही उड़ जाए।

अद्‌भुत है ये ज़िंदगी, आने-जाने के कारण
कोई आ के चला जाए और यादों में जिए।

डोरी बँधे तो टूट नहीं जाये
तितली फिर रंगों में डूब जाए।

परिचय

समय-समय का विविध परिचय
मैं मधुमक्खी हूँ।
सर्दियों की सुबह का सूरज,
भीतर बैसाख (महीना) हूँ।

मक्खी बनकर यहाँ-वहाँ
मैं कभी कहीं नहीं बैठूँ
फूल के पास बैठ मैं तो
परिमल में प्रवेशुं
मस्त हवा के झोंके-झोंके
फूल गुलाबी हूँ
समय-समय का विविध परिचय
मैं मधुमक्खी हूँ।

उपवन हो वहाँ राग भी होता
और रंग-बिरंगी लीला
बने रास्ते पर चलूँ नहीं
पर मेरे विविध हैं रास्ते
ऐसे देखो तो फकीर, फ़क्कड़
पर मन से मैं नवाबी हूँ
समय-समय का भिन्न-भिन्न परिचय
मैं मधुमक्खी हूँ।

पत्थर देता ठेस और ठोकर
लेकिन होता अंतर और संकट

पत्थर में से रचूँ सीढ़ियाँ
जो पर्वत पर पहुँचाएँ

स्वयं वो मेरा ख़ुदा सदा से;
सब का साथी हूँ
समय-समय का विविध परिचय
मैं मधुमक्खी हूँ।

पारदर्शक

अमावस्या की रात का रहस्यमय मौन
अथवा
ढीठ गुनेहगार की सी चुप्पी रखने में
मेरा विश्वास नहीं है
जल की तरह पारदर्शक रहना और
बहने का उत्सव क्या है
वो मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

मृगजल और
तालाब के मेंढकों के स्वर्ग के आभास
और भ्रम के भेद को मैं भेधता हूँ

अन्याय के सामने आँखें उठाने
तथा न्याय समक्ष आँखें झुकाने में
मानवमात्र को
शर्म नहीं होनी चाहिए।

प्रतीक्षा

आकाश में
पत्थर जैसा सूरज उगा
जूट...जैसा सारा दिन
बिल्कुल खुरदरा
शुष्क हवा वृक्ष के साथ
विचित्र व्यवहार करती है
दोपहर टी.बी. के रोगी की तरह खाँसती है
शाम लाचारी-सी ढलती है
और लेटती है

सारी रात सूरजमुखी
करती है प्रतीक्षा
आने वाले कल के सूरज की
कि कभी तो सूरज
फूल बनकर उगे !

प्रभु कृपा

हे प्रभु!
मैं स्वयं को और दुनिया को
खुश कर सकूँ या नहीं
पर तुम्हें मैं कभी भी नाराज़ नहीं करूँगा।

तुम्हारी कृपा से काँटे फूल बनते हैं
गर कोई छत्र-छाया न हो
और भयंकर बारिश हो रही हो तब
तुम धूप बन के पास आते हो।

मौसम कोई भी, आता-जाता
या जाता-आता रहे
पर मेरे आंतरिक मौसम में
तुम मुझे बसंत ऋतु का आभास देते रहते हो
तुम मुझे कितना कुछ देते हो।
तब किसी दिन
मैं, तुम्हें और मुझे, दोनों को
एक ही प्रश्न पूछता रहता
कि तुम्हें खुश करने के लिए
मैं क्या करूँ
अथवा क्या न करूँ ?

प्रयत्न

सर झुकाने की बारी आये
ऐसा मैं कभी नहीं करूँगा।
पर्वत की तरह अचल रहूँ
व नदी के बहाव-सा निर्मल
शृंगारित शब्द नहीं मेरे
नाभि से प्रकटी वाणी हूँ
करता हूँ इस धरती से प्रीत
ख़ामोशी का आनंद लेते हुए गाता हूँ गीत।

संस्कारों की लय ताल में
गूँज रही है कोई सदी
नीचा देखने की बारी आए
ऐसा मैं कभी नहीं करूँगा।

मेरे एक-एक कर्म के पीछे
ईश्वर का हो आशीर्वाद
गलत जो नहीं करता
वो कभी नहीं डरता
भीतर ही भीतर होते सब संवाद

मेरा आचरण मेरे वचनानुसार :
होगा नहीं बुरा कभी
नीचा देखने की बारी आये
ऐसा नहीं कहूँगा मैं कभी।

●

प्रार्थना

मनुष्य की टोली हो या मेला
स्वजन और स्नेहीजनों को
ढूँढ़ता हूँ।

मेरे घोंसले के
प्रवेश द्वार पर टाँगा है :
"सत्य का स्वागत है :
सत्य चाहे विरोधी हो,
चाहे तिरछा-बाँका हो।"

बगीचे की ख़ुशबू की अपेक्षा
खाद की दुर्गंध महामूल्यवान है
विरोध में से भी सत्य को
ढूँढ़ना मेरा धैर्य/शांति है।

अफ़वाहों को राख-सा बिखरा देने का
विवेक भी है.....
अफ़वाहों से कभी जीवन जीया नहीं
जा सकता
दो किनारों के बीच के सत्य को
पाने की मुझमें क्षमता है।
हर बात का सत्य अलग हो सकता है
और होता ही है
मैं...मैं सिर्फ़ मेरे सत्य से
जुड़ा रहना चाहता हूँ।

सत्य मेरे लिए सूर्य है
और...मेरा जीवन
गायत्री मंत्र बन जाये
ऐसी मेरी हर पल प्रार्थना है।

●

प्रेम

जल की जंज़ीर जैसा ये मेरा प्रेम
कभी बाँधने से बँधा नहीं

कोई सौगंध दे, ये मुझे पसंद नहीं
फिर ऐसे रिश्ते में मेरा मन बँधता नहीं
रात भर ओस बिंदु सा शीतल ये प्रेम
पकड़ा कभी तो पकड़ाया नहीं।

धूप तो किसी दिन मुट्ठी में आयेगी नहीं
बहती पवन को पिंजरा भी रास नहीं
बहुरूपी बादल-सा फिरता ये प्रेम
कभी स्वीकारने से स्वीकाराया नहीं।

धुंध तो आए और धुंध तो जाए
इससे सूरज को कुछ नहीं होता
राजहंस-सा तैरता मेरा ये प्रेम
मोती की माला में गूँथने से गूँथाया नहीं।

संग्रह गुजराती भाषा में प्रकाशित हुआ। एक काव्यगोष्ठी में श्री ललित अग्रवाल जो गांधीनगर के एम.बी. पटेल हायर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसीपल थे उन्होंने मुझसे कहा, "अंजना जी, नरेन्द्र मोदीजी की कविताओं का संग्रह अभी आया है, क्या ही अच्छा हो अगर आप उसका हिन्दी अनुवाद करें, क्योंकि आपके अलावा ये अच्छा काम कोई नहीं कर सकता।"

मैंने कहा, "अरे नहीं ललित जी ऐसी बात नहीं है।" मेरी बात बीच में ही काटकर वे बोले, "जो अनुवाद आप करती हैं न, वो सबके बस की बात नहीं है।"

क्या आत्मविश्वास था उनका मुझ पर...

खैर, मैंने संग्रह पढ़ा और कुछ कविताएँ मन में घर कर गईं जैसे, "यात्रा", "सपनों के बीज", "प्रयत्न", "कारगिल", "जाना नहीं", "पतंग" आदि और मन में निश्चय किया कि इस पुस्तक का अनुवाद अवश्य करूँगी।

सन् 2008 में उनसे मुलाकात तय हुई तब उनकी गुजराती कविताओं की पुस्तक मैं साथ ले गई थी और मुलाकात में मैंने उनकी कविताओं के अनुवाद की बात कही। उन्होंने उसी पुस्तक पर गुजराती में "जय जय गरवी गुजरात" लिखकर हस्ताक्षर कर दिए तथा साथ ही गुजराती में प्रकाशित उनकी लिखी कहानियों की पुस्तक "प्रेमतीर्थ" भी मुझे दी।

धीरे-धीरे पुस्तक का हिन्दी अनुवाद "आँख ये धन्य है" पूर्ण हो गया लेकिन कहते हैं न कि हर चीज का अपना निर्धारित समय होता है और उस सही समय का इंतजार करना ही पड़ता है। जो चीज जब होनी होती है वह तभी होती है। मोदी जी की राजनैतिक व्यस्तता निरंतर बढ़ती चली गई और पुस्तक तैयार हो जाने के बावजूद उसके प्रकाशन में विलंब होता चला गया, शायद इसके प्रकाशन का समय अब आया है। इतने समय पहले अनुवाद की गई पुस्तक को मैंने फिर नये सिरे से पढ़ा और योग्य सुधार किए तथा सोचा पन्द्रह अगस्त पर प्रधानमंत्री जी को उनकी कविताओं का यह उपहार "आँख ये धन्य है" दिया जाए।

अनुवाद "परकाया प्रवेश" जैसा होता है। मेरी पूरी कोशिश रही है कि उनके सही मनोभावों को प्रस्तुत कर सकूँ। उनकी कविताएँ उनके व्यक्तित्व का आईना है, ऐसा मेरा मानना है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में 'विकल्प प्रकाशन' दिल्ली के प्रकाशक श्री पवन कुमार श्रीवास्तव तथा ग्राफिक डिजाइनर श्री अमरीष बी. पंचाल (अहमदाबाद) जिन्होंने पुस्तक का आवरण बनाया है, उनका मैं हृदय से आभार मानती हूँ।

आज सारी दुनिया मोदी जी के बारे में कुछ-न-कुछ कहती है लेकिन "स्वयं" मोदी जी को भी तो कुछ कहना है जिसकी थोड़ी-सी झलक इस संग्रह के माध्यम

कशमकश

ऊँचे पहाड़ को पाने कशमकश की,
लेकिन पत्थर मिले अंत में जी।

खिले बगीचे को पाने चला
लेकिन काँटे मिले पथ में जी।

सदियों से चाहा नदी को पाना
लेकिन मिले मुझे बुलबुले जी।

तपता सूरज दूर रहा
और परछाईं के फोटो मिले जी।

चाँद को मैं पाने चला
लेकिन चमक को मैंने खो दिया जी।

सागर की इक लहर जाने क्यूँ ?
किनारे जा कर रोई जी।

आधी रात को

आधी रात को कोयल बोले
हृदय के द्वार खोले
कोयल को कहना भी क्या?

अंतरंग बात यूँ बताई नहीं जाती
जल की विसात यूँ फैलाई नहीं जाती
संवेदना को ऐसे कैसे फेंके
कोई तराजू में तोले
कोयल को कहना भी क्या?

अपनी वेदना को आप ही संभालना
भरोसेमंद हो ऐसा कहाँ है कोई आदमी
बंद दरवाज़े क्यों खटखटाये,
और मृगजल से भरमाए
कोयल को कहना भी क्या?

मेरा मन

मन में मेरे जंगल लगे हैं
अंग-अंग में आग
जंगल में मैं ढूँढ़ता हूँ
हरा-भरा वह बाग।

सुखी देखे, दुःखी देखे
देखे रोगी भोगी
माया जिसने छोड़ी
उसकी काया सदा निरोगी।

झन-झन, झन-झन तार-तार पर
बजता बिना छिड़ा सा राग
मन अपने को समझाता हूँ
जाग अभी तो जाग।

काँटों को चुन लिया
फूल का झीना गलीचा बिछाया
सूखी इस धरती पर
बीज दिया इन्द्रधनुष
पसीने का तिलक ढूँढ़ता
है मेरा भाग्य ललाट।

मन से समर्पित होना

आकाश को
अपनी बाँहों में लेने को प्रयत्नशील
उछलता सागर
मेरी प्रेरणामूर्ति है
यही मेरे यौवन की
शक्ति और स्फूर्ति है।

यह शहनाई भी बजाता है
जयघोष भी
किसी पर्वत की चोटी का
शिखर भी ये बताता है।

किसी भी किनारे की परवाह करे,
ऐसा ये सागर नहीं
अगर स्वीकार करने की शक्ति हो
तो....
अपनी हथेली में
देता है झाग के फूल
फूल में छलकती है
लहरों के बगीचे की सुगंध
फल में टपकती है
नदी के विलय की व्यथा
सागर में समा गई नदी को
कभी भी अलग नहीं किया जा सकता।

मैं पहाड़ की तरह खड़ा रह सकता हूँ
और समुद्र की तरह छलक भी सकता हूँ
तुम मुझे
कुतर भी सकते हो और
खोद भी सकते हो
जल की तरह
खुदाई की ढाल में उतार भी सकते हो।

हाथ में धरो
संवेदना की कील
और स्नेह की हथौड़ी
क्षितिजों की दीवार
आकाश की छत....
मनुष्यों की भीड़
हरी-भरी सृष्टि
मेरे घर का आकार,
मेरे मन का विस्तार
ये समस्त संसार।

मंत्र

शरद ऋतु की रात.....रेत का रेगिस्तान
रेती का कण-कण मानो सोने का रज कण।

पल-पल का ये सौन्दर्य
इसका संबंध अपने आप
शाश्वत से जुड़ जाता है।
बहती हुई इस ज़िंदगी में
हर पल आता है, जाता है।

बहता पानी
टपकती रौशनी
पवन की लहर
फूलों की खुशबू
जलता हुआ दीया–
सबकी अनुभूति होती है;

लेकिन ये जीवन जो करता रहा आना-जाना
उसका पता ठिकाना मालूम नहीं
और न ही पूछा है

कल शाम ज़िंदगी थम सी गई होती
बीते हुए कल को भी जिया जा सकता है
आने वाले क्षण में आशा का दीप
प्रज्ज्वलित किया जा सकता है।

अंधेरा भी रौशनी को चूम सकता है
बहती हुई ज़िंदगी का पल-पल रुक सकता है।

कुछ क्षणों के लिए ज़िंदगी को ज़रूर
मिला तो था
कुछ पल जिया तो था
चलते-चलते कुछ पल को रुक तो गया
प्रत्येक साँस में सुगंध है
प्रत्येक बात में प्रेम है
बीती हुई संध्या की याद है
रुके हुए आँसू में बहने की आशा है
सोए हुए सपने में नई सुबह है
यंत्र जैसी ज़िंदगी में
पाया....सौन्दर्य का अद्‌भुत मंत्र।

माँ मुझे दैवत्व देना

मैं तो हृदय की कोठरी में बैठा हूँ माँ
माँ तू मुझे कहना सुखी रहो, सुखी रहो।

मुझे दैवत्व बल देना
शारीरिक शक्ति देना
मुझे देना तू सत्यता
ताकि रखूँ मैं पथ में
यही एक मेरा व्रत
मुझे तेरी चाहत
मुझे तुझसे राहत

माँ मुझे बल देना, शारीरिक शक्ति देना
मैं तो हृदय की कोठरी में बैठा हूँ माँ।

राग मैंने त्यागा
विराग मैंने माँगा
नहीं फूलों की माया
नहीं सौरभ की छाया
तेरे उस संग में, कितने ही रंग
मुझे अपने नहीं लगते,
लगते हैं पराये

मुझे देती है सांत्वना एक तू मेरी माता
माँ मुझे बल देना, शारीरिक शक्ति देना।

मेरा काँटों भरा है पंथ
तेरा प्यार तो है अनंत
मेरे भवसागर में एक तेरा ही है अस्तित्व
मेरे भवसागर में एक तेरी ही है नाव
सागर भी किसी दिन सिसकी भरे
और तब भी
कभी मैं कुछ न बोलूँ अरे !
माँ, मुझे बल देना
मुझे शारीरिक शक्ति देना।

बाग-बगीचे कभी सूख जाएँ
फूल अपने आप मुरझा जाएँ
माली भी खुद अगर शरमा जाए
तब तू आँसुओं से सींच देना
मेरे अवगुणों पर आँखें अपनी
मींच लेना

फूल का एक-एक हार ऐसा तू गूँथ
कि उसमें से प्रकट हो ईश्वर का रूप
माँ मुझे बल देना,
मुझे शारीरिक शक्ति देना।

माया

मुझे है कोरे काग़ज़ की माया
कोरे कागज़ का कलेजा देखो तो
कितने ही चेहरे है छिपाये।

कोरे कागज़ में बादल का चेहरा
और बादल बरसे तो उगे हरियाली घास,
कहीं-कहीं दिखते हैं वृक्ष और पहाड़
और आँखों को सुना
पवन की श्वांस
कोई नहीं पराया-बेगाना
मौन रह कर भी, हम ऐसे छाए।

भँवरा, तितली और जगमग जुगनूँ
बाँधते हैं पर्णकुटि एक
काग़ज़ सूँघता हूँ तो आती है उसमें से
पहली बरसात की महक

मुझे मिल गई मुलायम छाया
मैं तो अनदेखे की ओढ़ूँ परछाईं
मुझे है कोरे काग़ज़ की माया।

से देखने को मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

एक संवेदनशील कवि, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को 15 अगस्त, 2014 की हार्दिक शुभ कामनाएँ देते हुए यह पुस्तक आपको सौंप रही हूँ। आशा है आपको पसंद आयेगी। पाठकों की प्रतिक्रियाएं मेरे प्रयास को सार्थक बनायेंगी। इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ—

—डॉ. अंजना संधीर

15 अगस्त, 2014

भूतपूर्व प्राध्यापक कोलंबिया विश्वविद्यालय
न्यूयार्क, अमरीका
सम्प्रति : प्राध्यापक : भारतीय भाषा
संस्कृति संस्थान,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
एल-104, शिलालेख सोसायटी
शाहीबाग, अहमदाबाद-380004
गुजरात
ई-मेल : anjana_sandhir@yahoo.com

मिलने दो मेले में

भीड़ को मेले में बदल डालना
ही है मेरा जीवन धर्म
—मेरा जीवन कर्म
मेले में आदमी मिलता-जुलता है
समय को सुहाना बनाता है
मैं 'हयात' को मानता हूँ
नहीं-नहीं पर चौकड़ी मारो
कोई इमारत ढहती हो तो
उसे सहारा देता हूँ।

मानव के पीछे माधव हैं
और राघव हैं
मेरे पास बाँसुरी है
और शिव धनुष

ईश्वर और शैतान के बीच
मैं तो हूँ बस मनुष्य
मनुष्य होना ही है बड़ी बात

पृथ्वी में मैं स्वर्ग देखता हूँ
मेरी दौलत यही है
भीड़ को छँटने दो
मेले में मिलने दो।

यात्रा

दूर-सुदूर भूतकाल में मैं जा सकता हूँ
और
एक-एक चेहरे को स्पष्ट पहचान सकता हूँ
कोई दबाव स्मृति पर डालना नहीं पड़ता
सहज ही सब दिख जाता है
पहचान में आ जाता है
कुछ भी छुप नहीं पाता
ये तो साफ़ स्पष्ट, सीधी-सादी
बात इतनी ही है कि
जिनके साथ सहन किया होता है
वे कभी भूलते नहीं हैं
और साथ झेली गई यातना
आखिर तो...
यात्रा बन जाती है।

रहस्य

रात को
काले बुरखे पहन कर खड़े
वृक्षों को मुझे देखना नहीं है।

मुझे तो देखना है
सूर्य प्रकाश में खड़े हुए वृक्षों को
भरी दुपहरी का ताप झेलते
फूलों से खिलते और
पक्षियों से महकते
मुझे वृक्षों को देखना है.....

सुबह के वृक्षों की खुशी
दोपहर के वृक्षों की जवानी का उन्माद
और संध्या के वृक्षों की समझदारी
मुझे अपने रोम-रोम में संभाल लेनी है।

वृक्ष : मेरी आत्मा का अंश,
परछाईं में सुख-चैन से सोते
तपती दोपहर की साँस,
मेरी परछाईं को ओढ़ते
उनसे पाऊँ पवनरूपी प्रसाद
और अनुभव करूँ हल्की-हल्की बरसात
वृक्ष : मेरे अस्तित्व का पर्याय
मेरा रहस्य।

●

रमेश पारेख

इस मन रूपी पंचम के मेले में
अमावस्या का भयंकर स्वप्न घिरा है
सपनों के उगने से पहले ही
पतझड़ का पाँव यहाँ पड़ा है।

भरी दुपहरी में रात उगी है
आँखों में अँधेरा भरा है,
रमेश बिना मेरा मन
दुःख से कल्पता है
काल अब विकराल बना और
आँसू मौन बहते हैं।

रमेश के अक्षरों को मैं तो
नक्षत्रों का नाम देता हूँ,
अमरेली को याद कर
कविता का ये गाँव देता हूँ
हम अब किसको बताएँ
कि वीराना यहाँ कैसा पड़ा है ?

मुझे बिना आँख के चश्मे में
रमेश जैसा दिखता है
शब्दों का आधार लेकर
पहुँचना है कविता के पास
रमेश की तस्वीर को हमने
फ्रेम में फिर से जड़ा है।

नोट : रमेश पारेख गुजराती के एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे। वे अमरेली में रहते थे।

लक्ष्य को पाने

लक्ष्य प्राप्ति हेतु
खुद को भुलाता
दौड़ता, कूदता
और कभी
डगमगाता भी...
रक्त सिंचित
पथ पर कदम बढ़ाता
और
लाल चटक
पद्चिह्न देख
अश्रुमिश्रित मुस्कान बिखेरता
पूर्वगामियों की
रुधिर शय्या पर से
परिवर्तित होती सूर्य किरणें

सूर्य की तेजस्विता
मेरी मुस्कान को,
उसकी लाली को, फीका करती
और तब मेरा
"मैं" लुप्त हो जाता
लक्ष्य निकट लगता
गति तेज हो जाती।

वंदे मातरम्

वंदे मातरम्
—ये गीत नहीं
ये अपनी आन, बान और शान है
आज़ादी के महायज्ञ की आहूति है ये
राष्ट्रभक्ति का सूत्रधार ये
गणतंत्र के हृदयतंत्र का महामंत्र है ये
विकास की निरंतर धड़कती
झुके नहीं ऐसी बेमिसाल पहचान रहे
ये हमारी.....

१८५७ का प्रकाश पुंज ये
सत्य के लिये
रक्त का अभिषेक निरंतर....

वंदे मातरम्....
—ये शब्द नहीं
यह मंत्र है हमारा,
स्वतंत्रता संग्राम की ऊर्जा का स्रोत अपना,
विकास का ये राजमार्ग है
संकल्पित इस राष्ट्रजीवन का
महामार्ग है,
प्रजा जीवन की
हर सुबह की
प्रबुद्ध चेतना का स्वर है ये
वंदे मातरम्.....

विषम और विचित्र

चाँद उगे
और दरिया उछले नहीं

सूरज उगे
और सूरजमुखी चहके नहीं

नदी खुद
समुद्र को मिलने से इंकार कर दे

फूल खिलें
और भँवरा गुंजन करना छोड़ दे

घंटा बजे
और देवालय खुले नहीं

दीया प्रकट हो
और मन्दिर जगमगा न उठे

प्रेम इतना विषम और
विचित्र हो सकता है क्या ?

विस्मय की सुबह

पराजय की रात डूब गई है
विजय की सुबह आई है
प्रभात का आनंद लो आज
अपना कल भी उजला होगा
अँधेरे की प्रचण्ड दीवार टूट गई।

आया आज शौर्यपूर्ण प्रभात
अब सब लो शपथ का पथ
अपना रणवीर, रणधीर रथ
करो स्व में सर्व को महसूस
भुला दो सब स्वार्थ
फूल और सौगंध है आनंदमयी
आया आज शौर्यपूर्ण प्रभात।

अब व्यथा की कथा नहीं
न ही शोक संताप
आँधी-तूफ़ान दूर गया
और आकाश का विशाल विस्तार
कंटक, संकट सब दूर हुए
फूलों का बिछा बिछौना
आया आज शौर्यपूर्ण प्रभात।

उमंग छलकती धरती गगन में
सुगंध स्वप्न के रोम-रोम में
राम भरोसे रखो हृदय को
नहीं कोई असंतोष
आया आज शौर्यपूर्ण प्रभात।

व्यथा को बहने देना

व्यथा को बहने देना
आँसुओं को गिरने देना
फूल गिरे तो गिरने देना
धूल में उसको ठिठुरने देना।

सपने भीग गये हैं
बिना कारण बँध से गए हैं
आँख झरोखे बैठे आँसू को
चातक की तरह निहारने देना
व्यथा को बहने देना
आँसुओं को गिरने देना।

पल के छलकते ही, आशा मुस्काए
अनजानी-सी हृदय में कोई प्रेम लहर छलके
मेरी अँखियों के सरोवर में
हंसों को तरने देना
व्यथा को बहने देना
आँसुओं को गिरने देना।

सुख-दुःख की अनुभूति तो है
पल दो पल की माया

मैं तो बस ओढ़ लेता हूँ
तूफ़ानी बादलों की छाया
गहराये बादल को साजन
तुम मन भर बरसने देना
व्यथा को बहने देना
आँसुओं को गिरने देना।

मेरे गुजरात को प्रेम करे
वो मेरी आत्मा !

शब्द

मेरे शब्द तलवार हैं
बहते शब्द हैं कलरव करता पानी
एक दूसरे के लिए परस्पर पूरक खड़ग-नदी की वाणी।

एक दूजे के साथ परस्पर
फिर भी अलग है काफ़ला
अपने लिए कहाँ कल्पता हूँ
ये तो है अनंत तार
कथा कथन का राजा मैं हूँ, तू दंत कथा की रानी।

एक नदी और दो किनारे
एक तेरा एक मेरा
काल निरंतर चलता रहता
मानो हो बंजारा
कथा-व्यथा को जाना फिर भी रहती सदा अनजानी।

सनातन मौसम

रोज-रोज ये सभा, लोगों की भीड़
घेरता तस्वीरकारों का समूह
आँख को चौंधियाता तेज प्रकाश
आवाज को एन्लार्ज करता ये माइक
इन सबकी आदत नहीं पड़ी है
ये प्रभु की मेहरबानी है।

अभी तो मुझे आश्चर्य होता है
कि कहाँ से फूटती है ये शब्दों का झरना
कभी अन्याय के सामने
मेरी आवाज़ की आँख ऊँची होती है
तो कभी शब्दों की शांत नदी
शांति से बहती है
कभी बहता है शब्दों का बसंती वैभव
शब्द अपने आप अर्थों के चोले पहन लेते हैं
शब्दों का काफ़िला चलता रहता है
और मैं देखता रहता हूँ उसकी गति।

इतने सारे शब्दों के बीच
मैं बचाता हूँ अपना एकांत
तथा मौन के गर्भ में प्रवेश कर
लेता हूँ आनंद किसी सनातन मौसम का।

सपनों के बीज

मैं पत्थर को पत्थर ही कहता हूँ
और जल को जल
मैं अत्यंत यथार्थवादी मानव हूँ
आकाश को देखता हूँ
और इन्द्रधनुष पर मर मिटता हूँ
परंतु अपना घर
इन्द्रधनुष पर बनाता नहीं हूँ मैं
इन्द्रधनुषी रंग के सपने हैं मेरे पास
ये सपने रोमांटिक नहीं हैं
अपितु जीवन भर की तपस्या के हैं।

तुम्हारे पास सपने हों या न हों
परंतु सपनों के बीज मैं,
अपनी धरती पर बीजता हूँ
और प्रतीक्षा करता हूँ, पसीना बहाकर
कि वे अकुरित हों और उनका वह वृक्ष बने
फिर किसी विराट पुरुष की बाँहों समान
उनकी शाखाएँ फैलें
पक्षी उन पर घोंसले बनायें
और आकाश को छूने लगें
उनके कण्ठ से नदी की कल-कल की
ध्वनि समान ईश्वरीय गीतों के स्वर
लहरायें।

●

समन्वय

रात के गर्भ में से निकले दिन को कहता हूँ :

"आ, मेरे पास बैठ"
तेरे प्रति सम्पूर्ण प्रेम से छलकता हूँ मैं,
और तेरे जन्म से ही मनोमन खुश हूँ
मुझे ज्ञान नहीं है
कि दोनों में से कौन किसको पोषित कर रहा है
लेकिन इतनी समझ अवश्य है
कि हम दोनों परस्पर एक हैं।

काँटों की परवाह किए बिना
फूल की तरह विकसित
और सुरभित होते हैं हम
दिन की डाली पर सिर्फ फूल ही नहीं खिलते
पक्षियों की आवाज़ें भी महकती होती हैं।
आवाज़ों का आकार नहीं होता,
सुगंध की तरह
लेकिन उनकी निराकार गति होती है
स्थिति और गति का समन्वय
वही मेरी साधना है
चलो,
हम दोनों,
इस साधना के वरदान से
जितना जी सकें
उतना जी भर के जी लें।

मल्लाह

दरिया दिली
जिंदा दिली
लहरें हैं
हमारी जिंदगी की।

तारा मंडल
चंद्र कला
आकाशी गुरुजन
हमारे पथ प्रदर्शक हैं।

समुद्र में डाली दरार
देश के विभाजन की
कहाँ है खबर
आकाशी गुरुजनों को
दीवार बिना के दरिया में
क्या हिन्दोस्तान, क्या पाकिस्तान
सरहद पार करने की
ये तो दिन-प्रतिदिन की सजा है।

कोई आये या न आये
कोई छुड़ाये या ना छुड़ाये
लेकिन....
दिल में तो देशभक्ति की ज्वाला
है समुद्र में जलती
अग्नि की तरह।

संकल्प

कभी-कभी उगता है
आग उगलता हुआ सूरज,
कुनकुना-सा दिन
थोड़ा जलता तो हूँ।

आग उगलती चमक में
शीतल तल की खोज
किरणों के तीर को खींच
छाया-परछाईं की
भूल-भुलैया को भेदती
विकल्पों के काफ़लों में
अकल्पनीय संकल्प पाता हूँ।

संकल्प का प्रकाश
संकल्प की ऊर्जा
संकल्प की उष्मा
संकल्प का साथ
ढलती शाम
संध्या की गोधूलि रज
आज तो है
धनवान की आभा और धनवान की शोभा
अवतार स्वार्थ विहीन नहीं होता
और लाचारी मेरे खून में नहीं।

याद

फ़ीके हल्के याद के दीये
निकले अँधेरे को पीने
अँधेरा भी ऐसा घनघोर
कि पिया न जा सके।

जैसे पेड़ से ये पत्ता गिरा
वैसे उसकी याद फ़ीकी होती जाती है
याद का फ़ीक़ा होना अर्थात् क्या ?
याद को भरना अर्थात् क्या ?
याद का दिमाग़ कितना होगा ?
याद के रेगिस्तान में समुद्र उछले
याद बैसाख-सी दोपहर
याद के नाखून नहीं हैं पर पंजा है
याद के दीये बुझा डालो
याद के पर काट डालो पर.....
याद को भगाने से भी नहीं भागती
याद की फोड़ डालो आँख, जीभ को काट डालो
लेकिन...इन होंठों को नहीं सिया जा सकता
याद अँधेरे में भटकती है
भर आता है कण्ठ मेरा याद से
हाँ, याद से ये जीवन रुई-सा धुनता है
याद के अनेक रूप और रंग
याद है छाँव, याद तो धूप
याद के चलने की आवाज़ नहीं
याद का कोई मांगलिक अवसर नहीं

याद को क्या सूर्योदय ?
क्या सूर्यास्त ?

याद को मौत कैसी
याद की शरणागत कैसी
याद का नहीं कोई ढाँचा
याद का कोई नहीं छपरा/झोंपड़ी

याद बहता झरना है
याद से ही जीवन तैरता है।

हिन्दू-हिन्दू मंत्र

अत्र, तत्र सर्वत्र हमेशा हिन्दू-हिन्दू
एक मंत्र
बिन्दु-बिन्दु एक मंत्र
सिन्धु-सिन्धु एक मंत्र
यें मंत्र है मोती जैसा
अंधकार में ज्योति जैसा
हम उजाला फैलायेंगे
जग में उजाला फैलायेंगे।

ऊँच-नीच के भेद टाल कर
अपना शरीर पिघला कर
समाजरूपी पुरुष को देकर मुस्कान,
थमाकर पुरुषार्थ का गीत,
मन में मन्दिर रचेंगे
हम उजाला फैलायेंगे।

कोई शत्रु नहीं : सब हैं मित्र
हो अपना ऐसा चरित्र
टालकर प्रतिकूल संवाद को
नव संवाद रचेंगे
हम उजाला फैलायेंगे।

अन्न, वस्त्र, संस्कार सुविधा यहाँ
होगी सहज उपलब्ध

हरियाली होगी धरा यहाँ
और होगा तारों से भरा कोई
आकाश।

एकता, समता और ममता को
हम यत्नपूर्वक सँभालेंगे
हम उजाला फैलायेंगे।

ग्यारहवीं दिशा

निर्भय चित्त
लयांवित गीत
प्राणबद्ध स्वस्थ प्रीत
स्वप्न भरी मुस्कान
पुलकित हवा
अखंडित जल
खुशबू भरा आकाश
पल-पल पवित्र अग्नि से करता पुनीत
पृथ्वी स्नेहभरी सुगन्धित
परमेश्वर मेरा मीत
मैं देखता रहता हूँ, हर रोज़
नहीं अनागत, नहीं अतीत
केवल वर्तमान क्षण से अंकित
न ही कोई रस्म, न ही कोई रीत
नीरव मौन ये होता मुखरित
दसों दिशाओं के उस पार
ग्यारहवीं दिशा में बजता संगीत....

मेरे देश को प्रेम करे

वो मेरा परमात्मा !

□□□